Brahmi Script

Basic Course
In
Indian Numismatics
By
Indian Coin Society
Nagpur

(26th Shukla Day Coin & Philately Fair 2017)
21, 22 & 23rd April
Organised by – Todywalla Auctions

INDIAN COIN SOCIETY

2nd FLOOR PUNYAI APARTMENTS
217 BAJAJ NAGAR, NAGPUR 440010

BASIC COURSE IN INDIAN NUMISMATICS

(For beginners to learn basics of Indian Archaeology, History, Brahmi, and the art of identifying coins with practical hands on experience).

AT World Trade Centre, On the occasion of Shukla Day Celebrations,
21st April, to 23rd April
11 AM TO 2 PM. Each Day.

FACULTY

PROF CHANDRASHEKHAR GUPTA
Dr DHIRAJ CHAUDHARY
SHRI PRASHANT KULKARNI

JOINING FEES RS 300 FOR THE
WHOLE SESSION OF 3 DAYS.
BUISCUITS AND TEA
INCLUDED BUT NOT ACCOMMODATION.

CONTACT:

Farokh S. Todywalla, Trustee, Indian Coin Society, 9820054404
Ashok Singh Thakur, General Secretary, ICS, 9422136424

INDIAN COIN SOCIETY
217 Bajaj Nagar, 2nd Floor, Nagpur 440022

Basic Course in Indian Numismatics

Brahmi Script

2. वर्णमाला

अशोक के समय की ब्राह्मी लिपी में छह स्वरों का प्रयोग हुआ है। इसमें—अ, इ, उ, तीन मूल स्वर हैं। आ, ए, ओ, योगिक या संजात स्वर हैं। तथा व्यंजनों की संख्या तैंतिस है।

स्वर (Vowels)

अ (A)	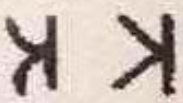	आ (Ā)	
इ (I)		ए (E)	
उ (U)		ओ (O)	

व्यंजन (Consonants)

क (KA)		ख (KHA)	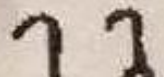
ग (GA)		घ (GHA)	
ङ (ṄA)		च (CA)	
छ (CHA)		ज (JA)	
झ (JHA)		ञ (NA)	

ट (ṬA)		ठ (ṬHA)	
ड (ḌA)		ढ (ḌHA)	
ण (ṆA)		त (TA)	
थ (THA)		द (DA)	
ध (DHA)		न (NA)	
प (PA)		फ (PHA)	
ब (BA)		भ (BHA)	
म (MA)		य (YA)	
र (RA)		ल (LA)	
व (VA)		श (ŚA)	
ष (ṢA)		स (SA)	
ह (HA)			

3. अशोककालीन लिपि की मात्रायें

मात्राओं के लिए अशोक लिपि में अलग से चिन्ह बनाये जाते थे। जो निम्न प्रकार के हैं।

(1) **'आ'** की मात्रा के लिए अक्षर के ऊपर दाहिनी ओर आड़ी पाई (–) बनाई जाती थी। पाई को अक्सर ऊपरी सिरे पर लगाते थे। लेकिन ज, ट, ठ, ण, थ, ब शब्दों में मध्य में दी जाती है।

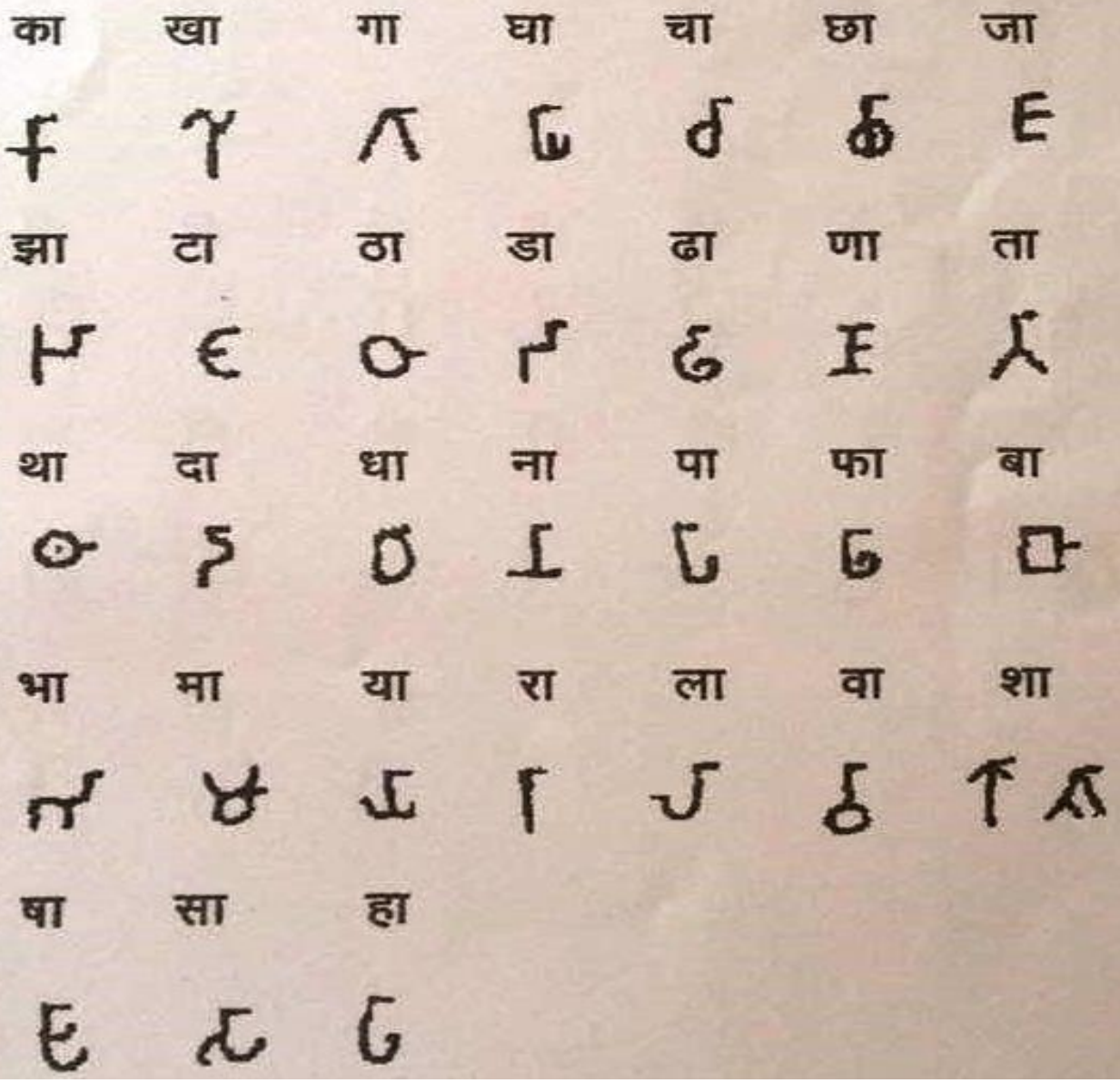

(2) 'इ' (ि) की समकोण के आकार की मात्रा निश्चित थी। जो व्यंजन की दाहिनी ओर ऊपर (┘) की तरफ लगाई जाती थी। परंतु कहीं-कहीं समकोण के स्थान पर गोलाईदार या तिरछी लकीर भी मिलती है।

कि खि गि घि चि छि जि

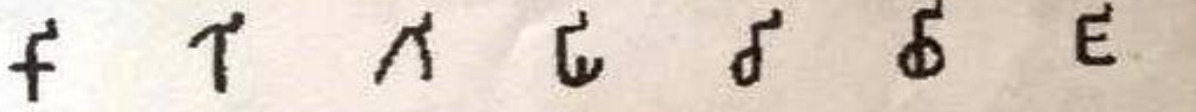

झि टि ठि डि ढि णि ति

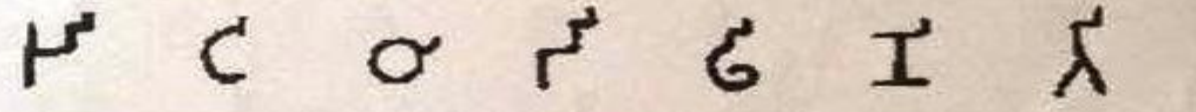

थि दि धि नि पि फि बि

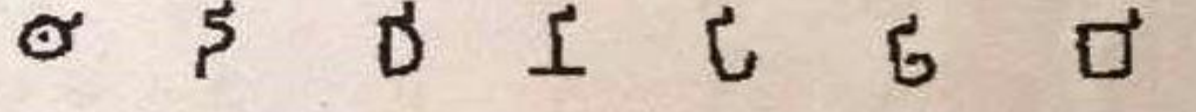

भि मि यि रि लि वि शि

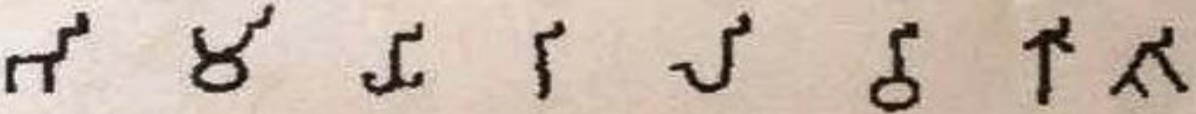

षि सि हि

(3) 'ई' (ा) की मात्रा का (ॖॖ) चिन्ह है, जो व्यंजन की दाहिनी ओर ऊपर की तरफ जोड़ा जाता है। परन्तु कहीं-कहीं आड़ी सीधी लकीर को तिरछा कर दिया गया है। समकोण के स्थान पर गोलाई मिलती है। 'थ' के साथ केवल दो तिरछी लकीरें ही लगा दी गई हैं।

की खी गी घी ची छी जी

झी टी ठी डी ढी णी ती

थी दी धी नी पी फी बी

भी मी यी री ली वी शी

षी सी ही

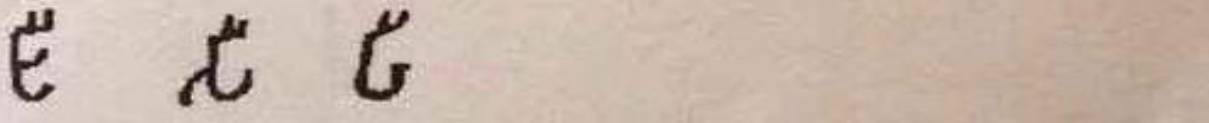

(4) 'उ' की मात्रा व्यंजन के नीचे एक खड़ी (।) या आड़ी (—) लकीर लगाई जाती है। व्यंजनों का निचला हिस्सा गोल या आड़ी लकीर वाला होता है। उनके साथ खड़ी और जिनका खड़ी लकीर वाला होता है उनके साथ आड़ी लकीर दाहिनी ओर लगाई जाती है।

कु खु गु घु चु छु जु

झु टु ठु डु ढु णु तु

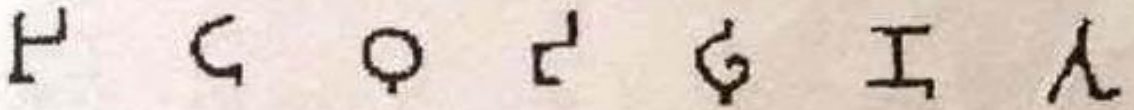

थु दु धु नु पु फु बु

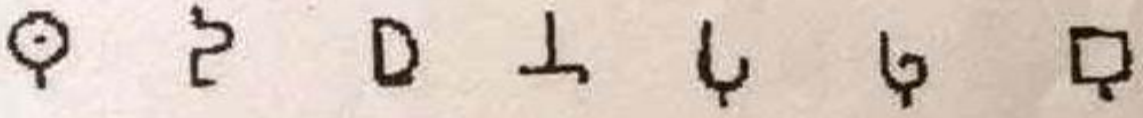

भु मु यु रु लु वु शु

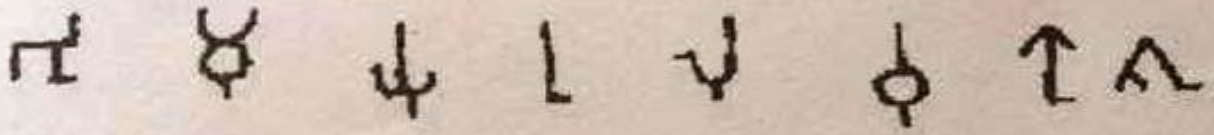

षु सु ह

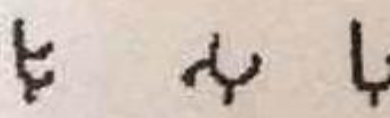

(5) 'ऊ' (दीर्घ) यह स्वर उ+उ (L L) मिलकर (L) दीर्घ 'ऊ' बनाया जाता है। यह व्यंजन के नीचे दो खड़ी (II) या आड़ी (=) लकीरें लगाई जाती हैं। ह्रस्व 'उ' में जिस प्रकार से खड़ी व आड़ी लकीर लगाई जाती है उसी प्रकार से एक खड़ी व आड़ी (II =) लकीरें लगाई जाती हैं।

कू खू गू घू चू छू जू

झू टू ठू डू ढू णू तू

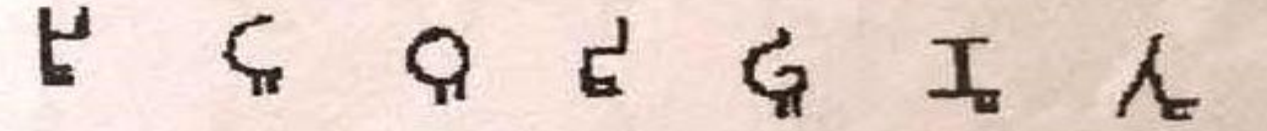

थू दू धू नू पू फू बू

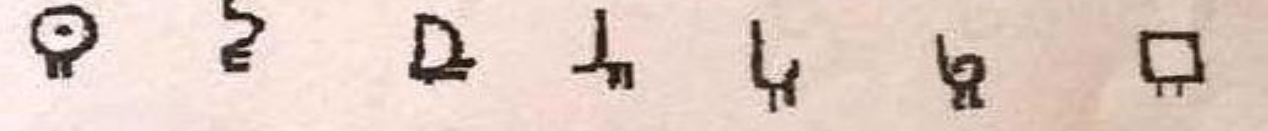

भू मू यू रू लू वू शू

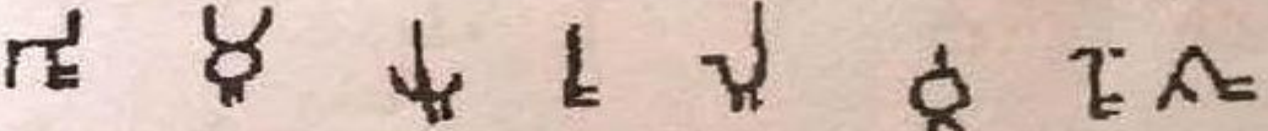

षू सू हू

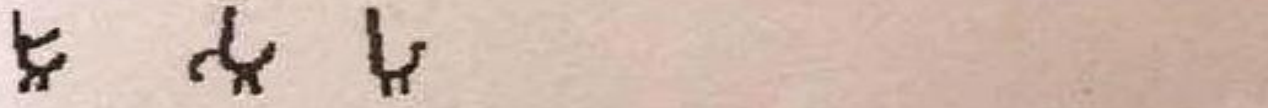

(6) 'ए' (E) स्वर को स्वर अ + इ मिलाकर बनाया जाता था। इसके लिए जो मात्रा प्रयोग में लायी जाती थी। वह व्यंजन के सिरे पर किन्तु कभी-कभी मध्य में बाई ओर (–) एक आड़ी लकीर लगाई जाती है।

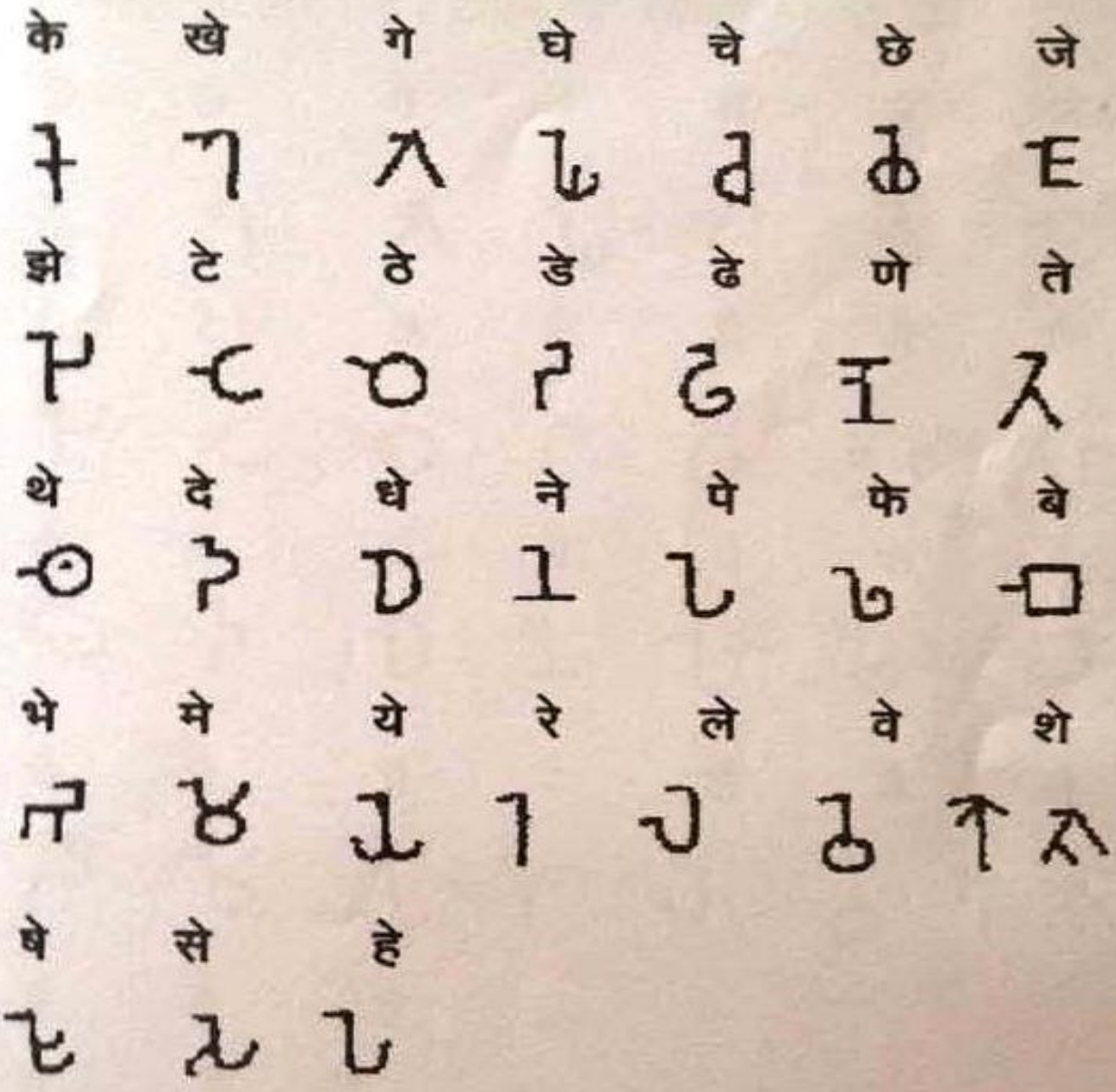

(7) 'ऐ' (AI) यह स्वर को आ+उ मिलाकर 'ऐ' बनाया जा सकता है। इसके लिए जो मात्रा प्रयोग में लायी जाती थी वह व्यंजन के बाई सिर पर परन्तु कभी-कभी मध्य में दो (=) आड़ी पाई के रूप में बना सकते हैं। अशोक के लेखों में ऐ की मात्रा के विरल उदाहरण हैं। उसमें 'थै' व्यंजन मिलता है।

कै खै गै घै चै छै जै

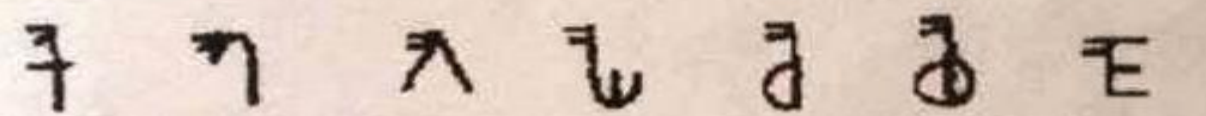

झै टै ठै डै ढै णै तै

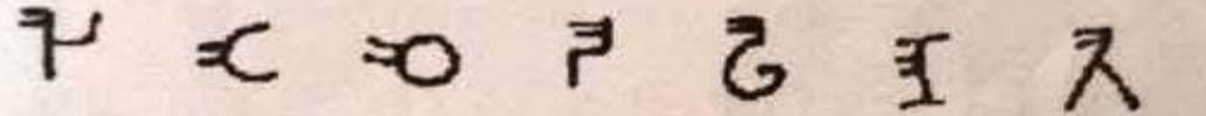

थै दै धै नै पै फै बै

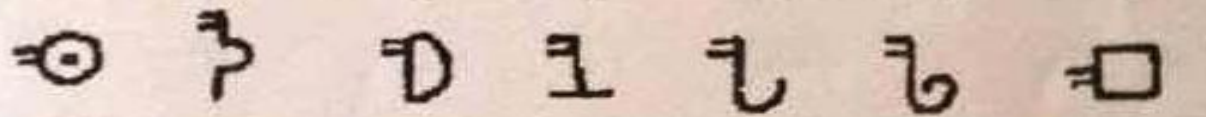

भै मै यै रै लै वै शै

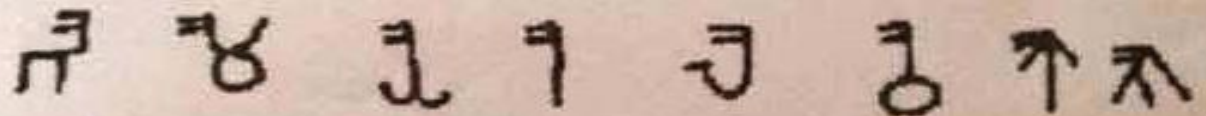

षै सै है

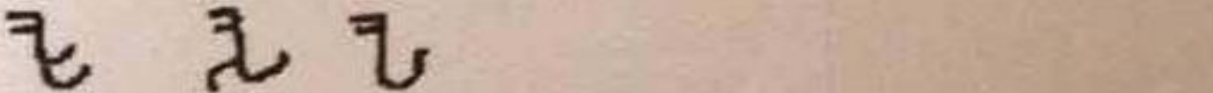

(8) 'ओ' (O) के लिए स्वर आ+ए की मात्राओं का संयुक्त रूप 'ओ' की मात्रा सिरे पर बाई और दाहिने भाग में लगाई जाती थी।

को खो गो घो चो छो जो

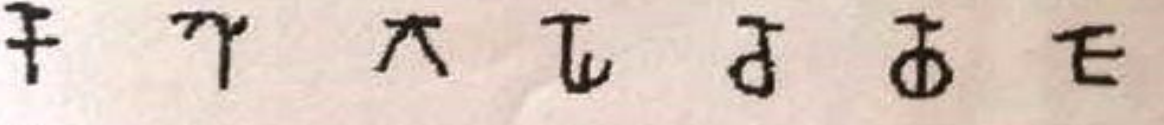

झो टो ठो डो ढो णो तो

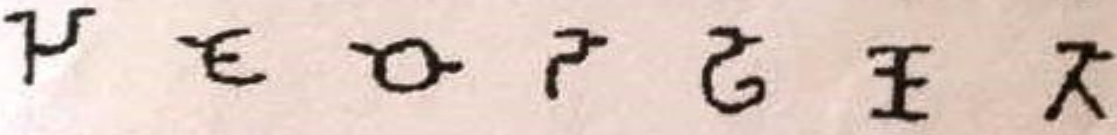

थो दो धो नो पो फो बो

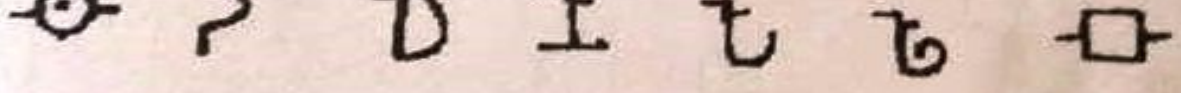

भो मो यो रो लो वो शो

षो सो हो

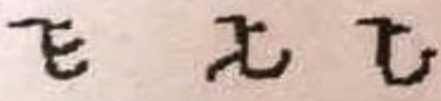

(9) **'औ'** का चिन्ह अशोक के लेख में नहीं है किन्तु उसमें ओ के चिन्ह से इतनी विशेषता है कि बाई ओर ए (–) के स्थान में दो आड़ी लकीरें (=) होती हैं।

(10) **अनुस्वार** : इसके लिए अक्षर के दाहिनी ओर बिन्दु रख देते थे। बिन्दु अक्षर के ऊपरी भाग के पास ही होता था। यह कभी-कभी बीच में और विरल उदाहरणों में पाद भाग में भी देखने को मिलता है।

कं खं गं घं चं छं जं

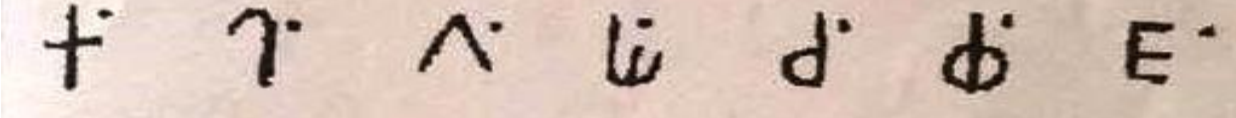

झं टं ठं डं ढं णं तं

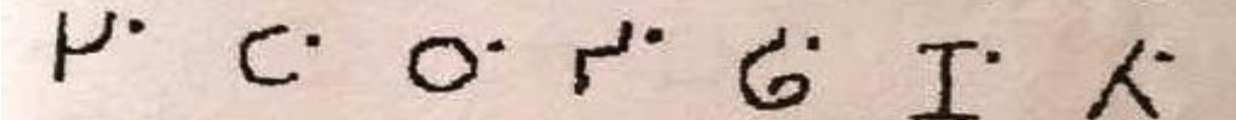

थं दं धं नं पं फं बं

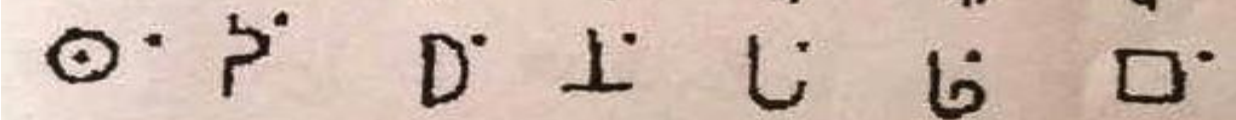

भं मं यं रं लं वं शं

षं सं हं

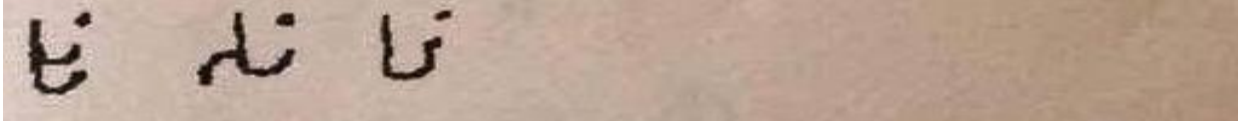

4. संयुक्त अक्षर (CONJUNCTS)

अशोक लिपि में संयुक्त अक्षर काफी कम प्रयोग किये गये हैं। संयुक्त अक्षरों में पहले उच्चारण होने वाले को ऊपर और पीछे उच्चारण होने वाले को उसके नीचे जोड़ा है, जो शुद्ध है। परन्तु कहीं-कहीं दूसरे को ऊपर और पहले को नीचे लिखा गया है, जो अशुद्ध है।

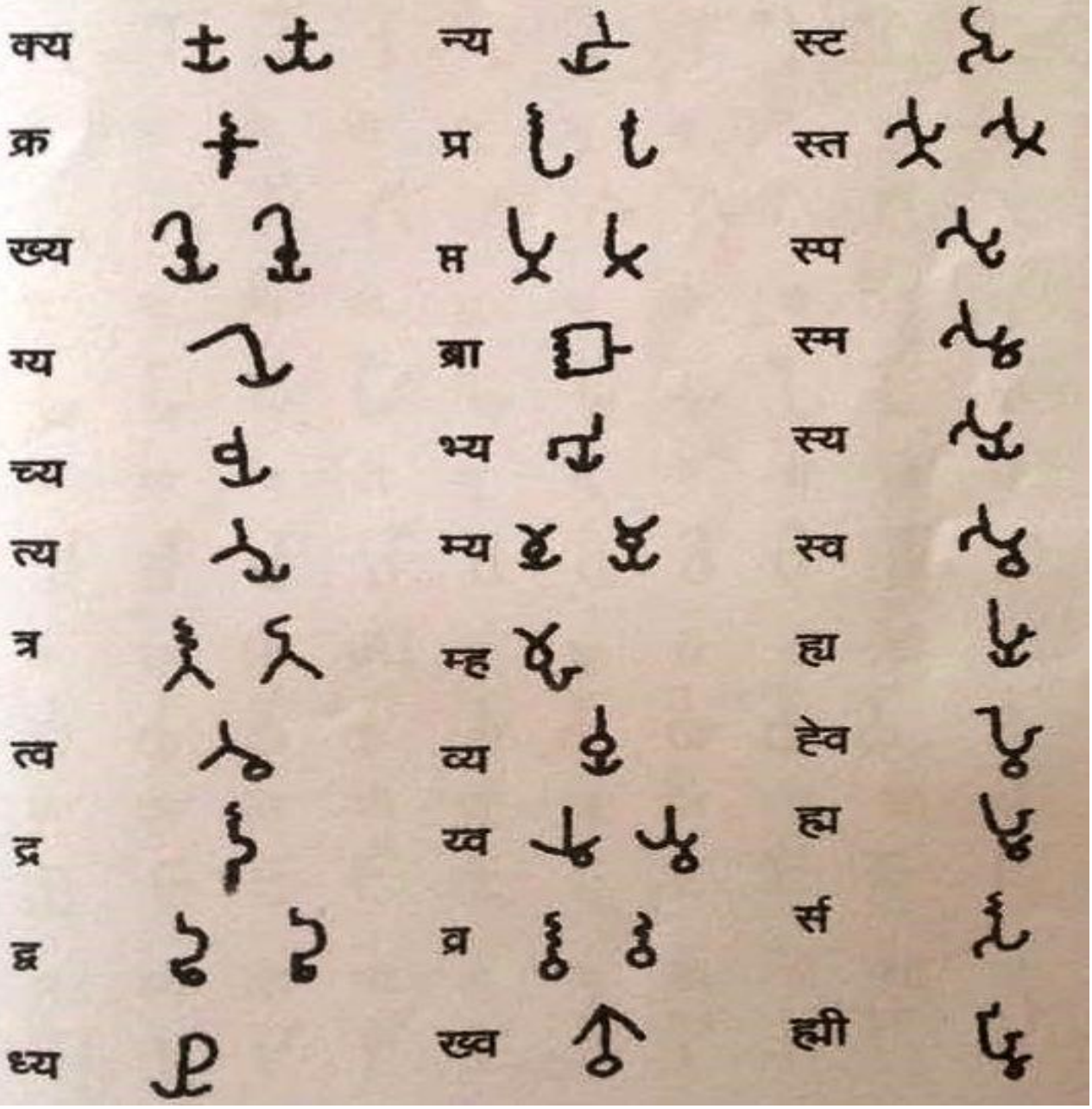

5. बारहखड़ी

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कं
			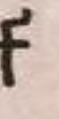					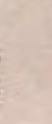	

ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खं

ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गं
		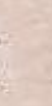							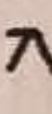

घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घ
		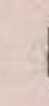							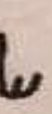

च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चं

छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छं

ज	जा	जि	जी	जू	जु	जे	जै	जो	जं

झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झं

ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टं
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठं
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डं
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढं
ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णं
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तं
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थं
द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दं
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धं

न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नं
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पं
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फं
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बं
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भं
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मं
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यं

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रं

ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लं

व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वं

श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शं

ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षं

स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सं

ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हं

6. अशोक के शिलालेखों में मिलने वाले ब्राह्मी लिपि के विभिन्न रूप

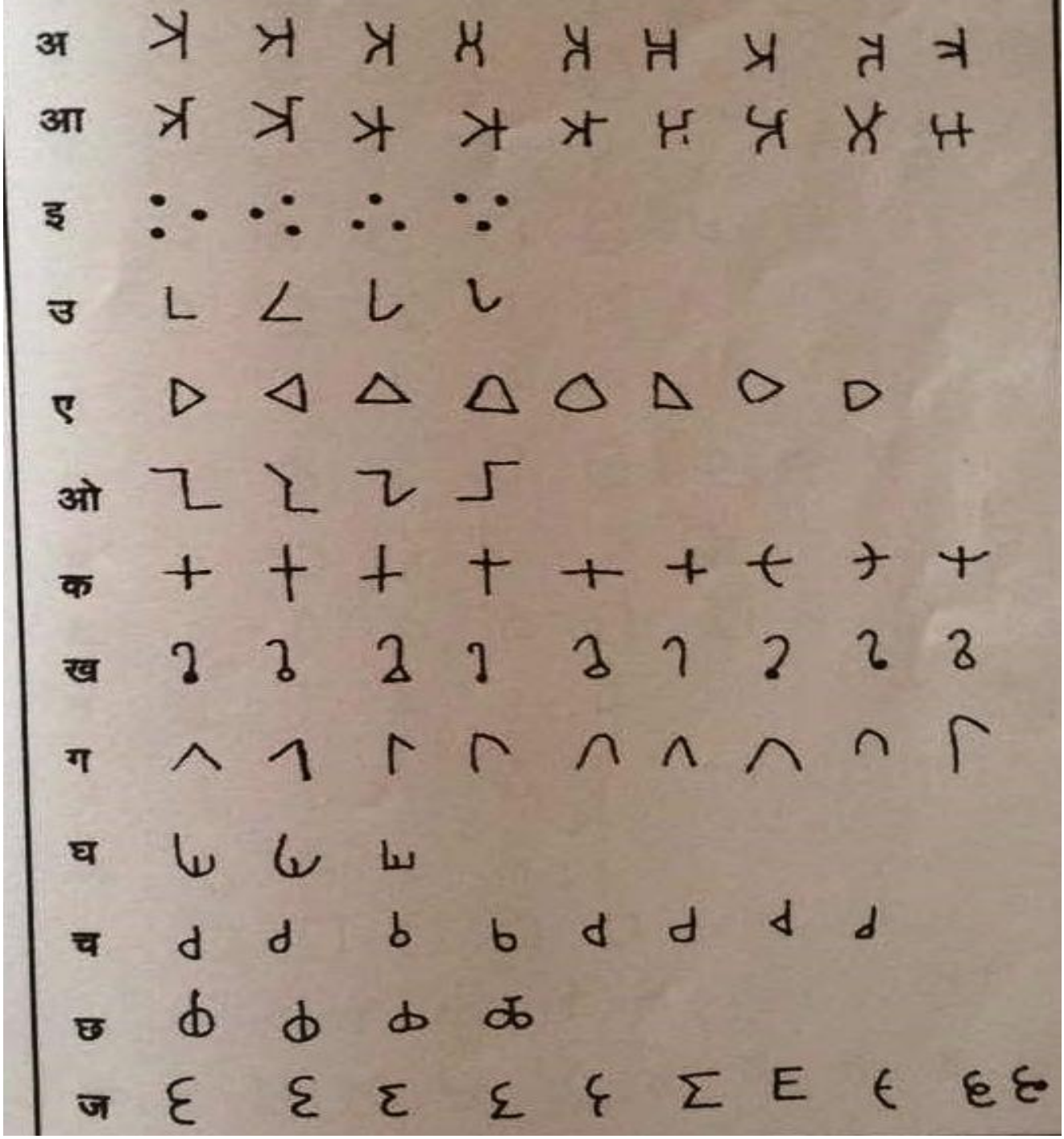

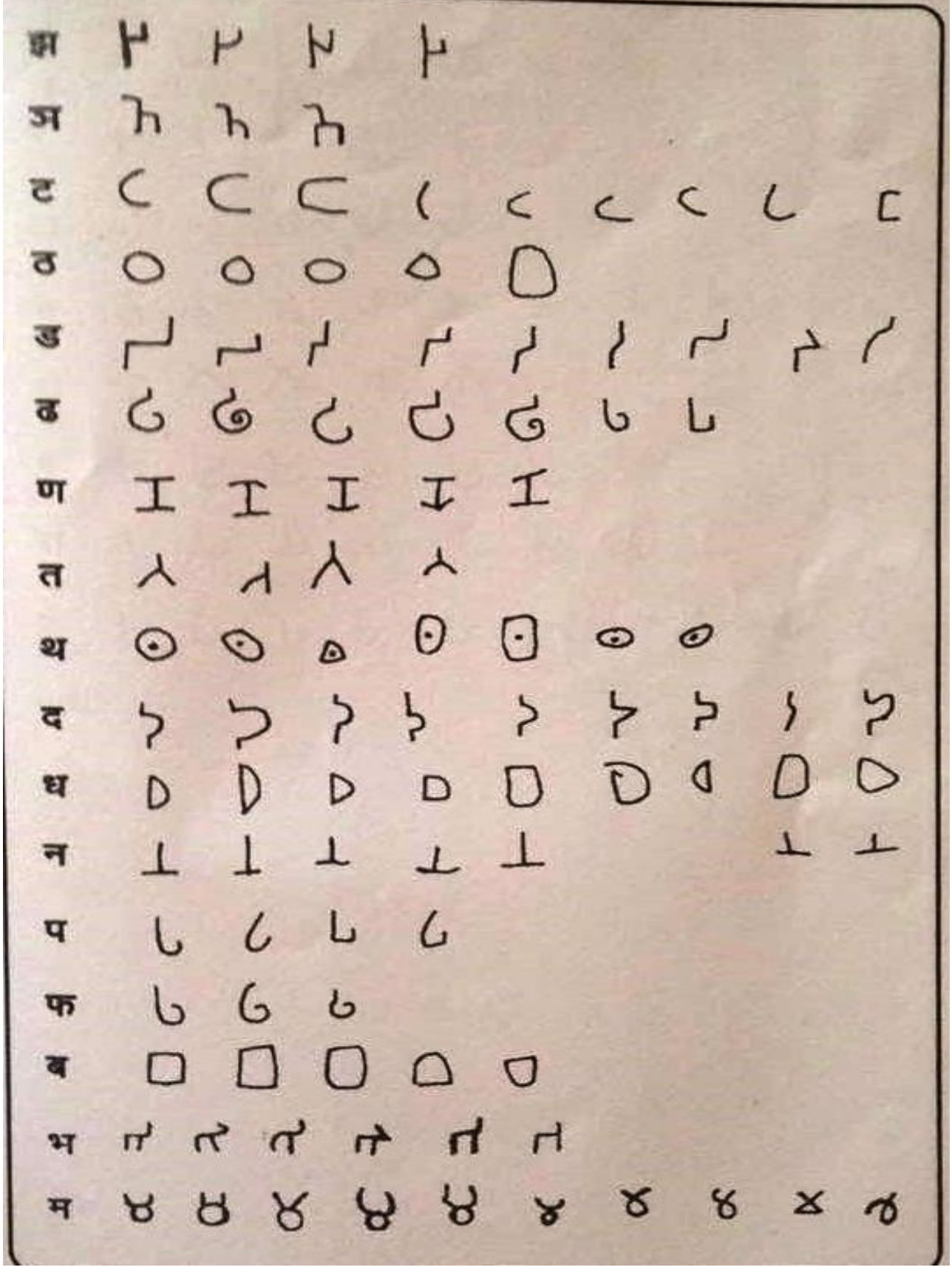
झ
ञ
ट
ठ
ड
ढ
ण
त
थ
द
ध
न
प
फ
ब
भ
म

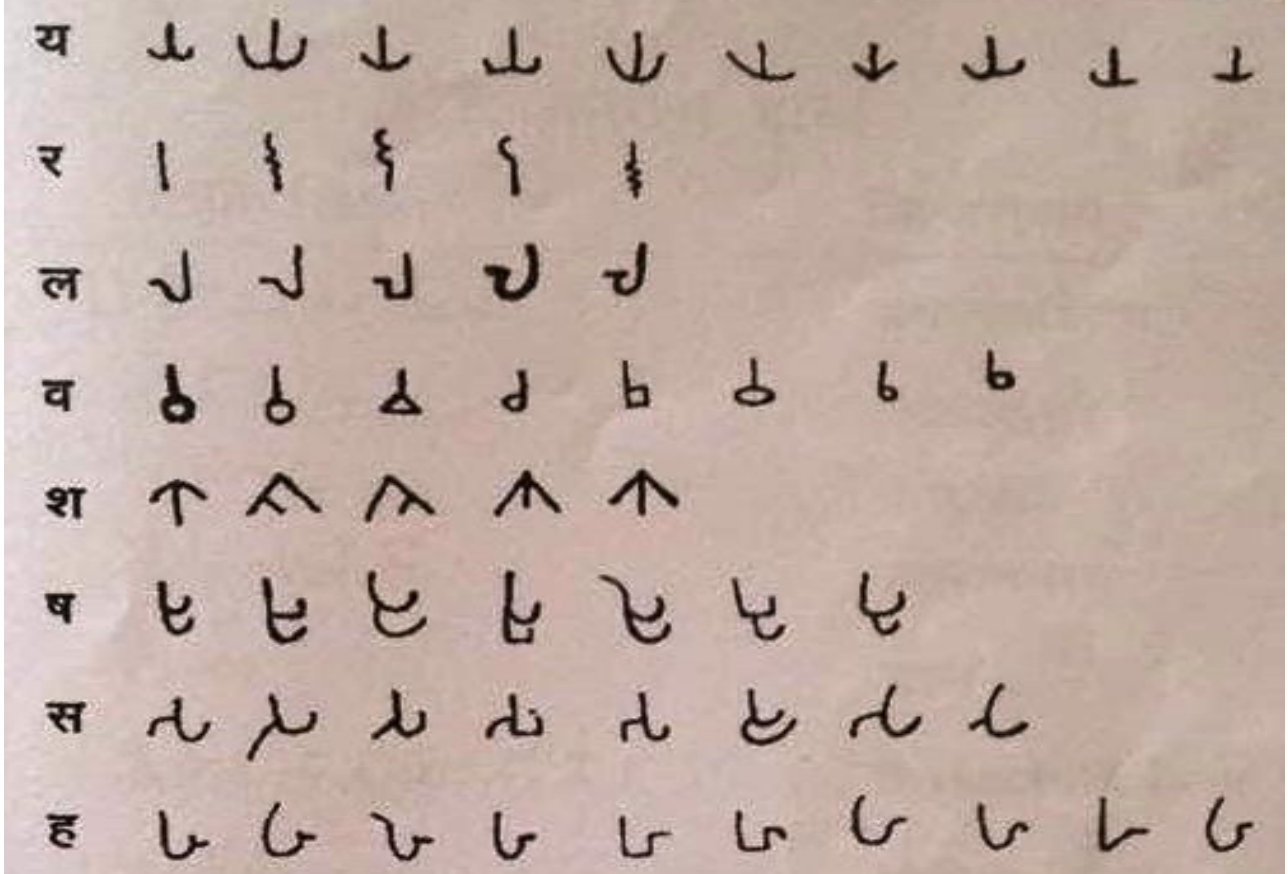
य
र
ल
व
श
ष
स
ह

7. कठिन शब्द

ब्राह्मी लिपि	लिप्यंतरण
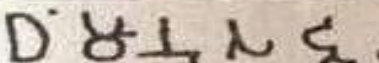	धंमानुसस्टिय
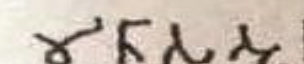	मित्रसस्तुत
	ब्राह्मण
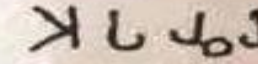	अपव्ययता
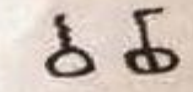	व्रछा
	त्रैदसवासाभिसितेन
	कलिग
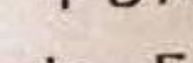	कुम्भा
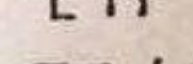	खानापिता
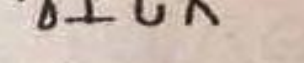	चिलठितिके
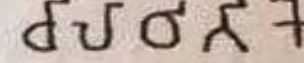	तोसलिस
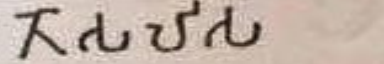	देवानंपियस
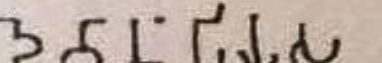	दानसविभागे
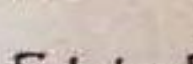	दीपना
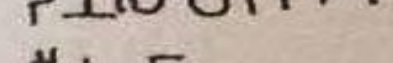	धंमचलने

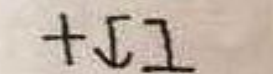
कयाने

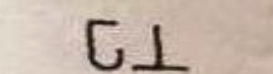
पान

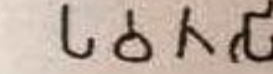
पवतसि

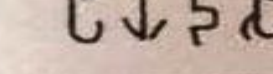
पियदसिन

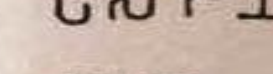
पासंडानि

बुधे

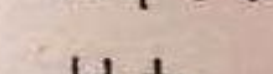
बहुकयाने

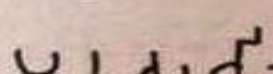
मक

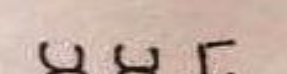
मनुसचिकीछा

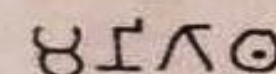
ममया

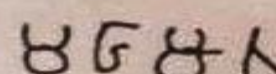
मुनिगाथा

महामात

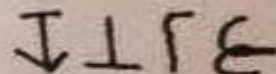
मोरा

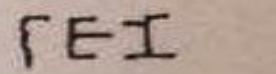
योनराजा

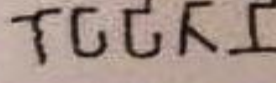
राजानो

रोपपितानि

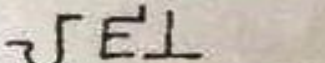
लाजिन

लिखिता

लाजा

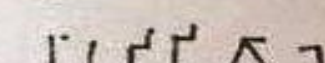
लुंमिनिगामे

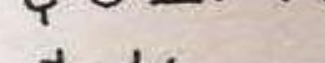
विजित

वीसतिवसाभिसितेन

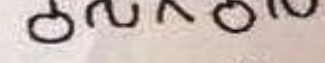
सक्यमुनी

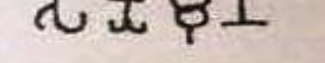
समाजो

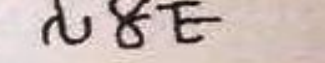
सिला फलाकानि

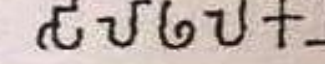
समयें

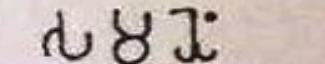
सुखीयन

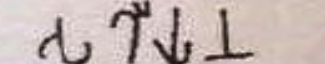
सवर

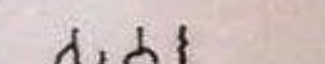
सके

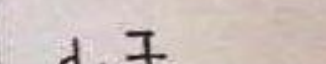
सघ

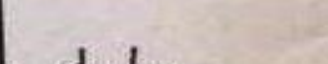
हिदतं

𑀥𑀁𑀫𑀫𑀳𑀸𑀫𑀸𑀢𑀸	धंममहामाता
𑀥𑀁𑀫𑀮𑀺𑀩𑀺	धंमलिबि
𑀥𑀁𑀫𑀮𑀺𑀧𑀻	धंमलिपी
𑀧𑀓𑀢𑁂	पकते
𑀧𑀚𑀸	पजा
𑀅𑀲𑁄𑀓𑀲	असोकस
𑀅𑀞𑀯𑀱𑀅𑀪𑀺𑀲𑀺𑀢𑀲	अठवषअभिसितस
𑀅𑀁𑀢𑀺𑀬𑁄𑀓𑁄	अंतियोको
𑀅𑀬𑀢𑀧𑀼𑀢𑀲	अयतपुतस
𑀅𑀮𑀺𑀓𑁆𑀲𑀼𑀁𑀤𑀭𑁄	अलिक्सुंदरो
𑀆𑀘𑀁𑀤𑀫𑀱𑀽𑀮𑀺𑀬𑀁	आचंदमषूलियं
𑀆𑀳𑀸𑀮𑁂	आहाले
𑀇𑀬𑀁	इयं
𑀉𑀩𑀮𑀺𑀓𑁂	उबलिके
𑀑𑀲𑀼𑀠𑀸𑀦𑀺	ओसुढानि
𑀓𑁂𑀢𑀮𑀧𑀼𑀢𑁄	केतलपुतो

Indian Coin Society Nagpur presents
"Basic Course in Indian Numismatics".
For beginners to learn basics of Indian Archeology, History, Brahmi, and the art of identifying coins with practical hands on experience.

Compiled by:-

Prem Pues Kumar

prem.stamps@gmail.com

09029057890